ये अव्यक्त इशारे

पुराने संस्कार परिवर्तन कर संस्कार मिलन की रास करो

13-10-2024

संस्कार मिलन की रास करने के लिए ''बालक और मालिकपन'' का गुण समान रूप में चाहिए। बालकपन अर्थात् निरसंकल्प हो जो आज्ञा मिले उस पर चलना। मालिकपन अर्थात् अपनी राय देना। जहाँ बालक बनना है वहाँ अगर मालिक बन जायेंगे तो संस्कारों का टक्कर होगा। तो राय दी, मालिक बने, फिर जब फाइनल होता है तो बालक बन जाना चाहिए।

Transform the old sanskars and perform the dance of harmonising sanskars.

In order to perform the dance of harmonising sanskars, there has to be the virtue of being a child and a master to the same extent. To be a child means to be free from any other thought and to obey whatever orders you receive. To be a master means to give your advice. When you become a master where you should be a child, there is a conflict of sanskars. Therefore, become a master and give your advice, but then when everything is finalised, become a child.